International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-3 May-June- 2022
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

''नेपाल और भारत के मध्य राजनीतिक सम्बन्धों का एक विश्लेशणात्मक अध्ययन''

Dr. Satish Chandra Joshi
Dept. of Military Science, (Govt. P.G. College)
Pithoragarh (Uttrakhand)

सरांश :

इस शोध पत्र मैने मुख्य रूप में भारत और नेपाल के राजनैतिक सम्बन्धों को प्राचीन भारत से आज तक स्पष्ट से परिभाषित किया है। जो इस प्रकारर है। प्राचीन काल में नेपाल में किरात–आधिपत्य का युग मगल साम्राज्य का युग था। इस विषय में नेपाल की वंशावलियों का साक्ष्य पूर्ण स्पष्ट है, इसके अनुसार नेपाल कम से कम अशोक के साम्राज्य में भारत में सम्मिलित था। अशोक के रूम्मिनदेई एवं निमाली सागर स्तम्भ–लेख दूसरे तराई क्षेत्र के अशोक साम्राज्य में सम्मिलित होना प्रमाणित करते हैं नेपाल के गोपालराज वंशावली से सूचना प्राप्त होती है कि अशोक अपने गुरू उपगुप्त के आदेशानुसार परिवार के साथ नेपाल की यात्रा पर गया था, नेपाल की घाटियों में अशोक ने प्रत्येक धर्मस्थल की तथा पाँच स्तूपों का निर्माण करवाया, जिनमें से चार स्तूप आज भी वर्तमान समय में सुरक्षित हैं। अशोक ने पाटलिपुत्र से नेपाल आने–जाने के मार्ग पर भी अनेक स्तूपों का निर्माण करवाया था। सम्राट अशोक के साथ उसकी पुत्री चारूमति भी नेपाल की यात्रा पर गई थी, जिसका विवाह नेपाल के क्षत्रिय युवराज देवपाल के साथ हुआ था। चारूमति अपने पति के साथ नेपाल में ही रह गई। चारूमति और देवपाल ने देवपाटन नगर की स्थापना की, जिसकी गणना नेपाल के प्राचीनतम नगरों में आज होती है। पश्चिमी नेपाल में स्थित स्वयंभूनाथ मन्दिर, गोपालराज वंशावली के अनुसार महान सम्राट अशोक की स्मृति से सम्बन्धित बतलाया जाता है। नेपाल की यह यात्रा, अशोक की एक राजकीय–यात्रा थी, जिसके फलस्वरूप अशोक ने विभिन्न स्तूपों का निर्माण कराया तथा स्तूपों का दोहरीकरण भी करवाया। वह साक्ष्य नेपाल पर अशोक के अधिकार के सूचक हैं। तिब्बती इतिहासकार लामा एवं तरानाथ ने भी उपरोक्त मत का परोक्षतः समर्थन किया है क्योंकि उसके द्वारा उल्लिखित एक किवंदन्ती के अनुसार अशोक ने अपने पिता के शासनकाल में ही नेपालियों और खश्यों के जो हिमालय प्रदेश के रहने वाले थे, के विद्रोह का दमन किया था। इसके बाद भारत में स्वतन्त्रता के बाद क्या हालत थे। इसका भी वर्णन इस शोध पत्र इस प्रकार मिलता है।

मुख्य शब्द – भारत का लोकतंत्र नेपाल का लोकतंत्र माआबादियों की सत्ता, भाषा, आदि।

प्रस्तावना :

अशोक के स्तम्भ, जिन पर इसके लेख उत्कीर्ण है, रूम्मिनदेई तथा निगाली सागर से मिले हैं तथा उसके द्वारा भगवान के अन्य स्थल की यात्रा करना यह सिद्ध करते हैं कि सम्राट अशोक का प्रभुत्व कम से कम नेपाल की तराई पर तो अवश्य था।[1] स्वयं ललितपाटन में अब तक वे स्तूप विद्यमान हैं, जो सम्राट अशोक द्वारा निर्मित माने जाते हैं। जिनकी बनावट साँची और गान्धार के स्तूपों के समान प्रतीत होती है। अनुश्रुतियों में अशोक का नाम

स्वयंभूनाथ मन्दिर और ललितपाटन के कुछ अन्य स्मारकों के साथ जोड़ा गया है। सम्राट अशोक के बाद उनके उत्तराधिकारियों का यही सम्बन्ध नेपाल से बना रहा। इससे यह विदित होता है कि सम्राट अशोक नेपाल जाकर शासन–व्यवस्था को भी संगठित करता रहा।[2]

सम्राट अशोक के बाद और गुप्त साम्राज्य की स्थापना से पूर्व भारत की शासन व्यवस्था प्रायः चार भागों में विभक्त हुई। दक्षिण के स्वामी सातवाहन थे, पूर्वी भारत पर शुगों का अधिपत्य था, पश्चिम में ग्रीकों की ध्वजा फहरा रही थी और उत्तर–भारत तथा पूर्व–पश्चिम के कुछ हिस्से कुषाणों के अधिकार में थे।[3] काशी प्रसाद जायसवाल मानते हैं कि पश्चिमी नेपाल से कुछ शुगकालीन रजत मुद्राऐं प्राप्त हुई हैं। जिनके आधर इस मत की पुष्टी होती है। इसके बाद नेपाल से हमारा सीधा सम्बन्ध अंग्रेजों के समकालीन समय के भारत में ब्रिटिश शासन के समय यद्यपि नेपाल औपचारिक रूप से एक स्वतन्त्र देश था, किन्तु नेपाल की राजनीति में अंग्रेजों का हस्तक्षेप बहुत अधिक था। भारत एक शान्तिप्रिय राष्ट्र है किन्तु चीन के तिब्बत में बढ़ते कदमों में हमें सुरक्षात्मक दृष्टि से नेपाली राजनीति में हस्तक्षेप रखने का प्रोत्साहन दिया और 30 जुलाई 1950 को दोनों देशों के बीच सन्धि हुई। बाद में वहीं राजाशाही का भी अन्त हुआ। संयुक्त राष्ट्र संघ में में नेपाल की सदस्यता के लिए भारत ने बार–बार प्रयास किया जो 1955 में पूरा हुआ। अनेक कारणों से 1953–54 में भारत के विरूद्ध नेपाली जनता के आक्रोश का भी सामना करना पड़ा इसके बाद भारत उसके आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप कर रहा है। दूसरे भारत नेपाल की कोसी नदी पर बाँध बना रहा था। तीसरे भारतीय सेना एवं तकनीकी विशेषज्ञ भी वहाँ थे। चौथे व्यापार समझोते में कुछ प्रतिबन्ध नेपाल पर थे। जिसका विरोध नेपाल में 1954 में भारतीय सदभावना मण्डल को काले झण्डे दिखा कर किया गया।[4] इसका ही एक परिणाम था, 1955 से ही चीन नेपाल में सक्रिय होने लगा और 1956 में नेपाल–चीन मेत्री सन्धि हुई और नेपाली प्रधान मंत्री चीन की यात्रा पर गए और 1957 में चीन के प्रधान मैत्री चाऊ–एन–लाई नेपाल आए। इससे भारत की सामरिक सुरक्षा के प्रति चिन्ता बढ़ना स्वभाविक था। 1960 में नेपाल में जनआन्दोलन हुआ। जिसमें भारत विरोधी दृष्टिकोण सामने आया और दोनों देशों के मध्य सम्बन्धों में कडवाहट बढ़ी। 1962 में जब चीन ने दलाईलामा प्रकरण पर भारत पर आक्रमण किया तो नेपाल ने तटस्थता की नीति अपनाई जिसे भारत द्वारा नापसन्द कर दिया।[5]

1962 के युद्ध के वक्त नेपाल भले ही भारत के प्रति तटस्थ रहा किन्तु इस आक्रमण से वह भी चौकन्ना हो गया था और उसका रूझान भारत की ओर बढ़ने लगा। नेपाल अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने लगा। प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री द्वारा नेपाल की यात्रा की गयी और दोनों देशों के सन्देहों को दूर करने के 'सरल सौम्य नीति का अनुसरण किया गया साथ ही यह आश्वासन नेपाल द्वारा दिया गया कि नेपाल के रास्ते कोई भी आक्रमण भारत पर नहीं हो सकेगा, 1966 में पुनःचार वर्ग मील के सुस्ता क्षेत्र' से दोनों देशों के मध्य सीमा विवाद उठ खड़ा हुआ। किन्तु इस बीच भारत द्वारा नेपाल के विकास में उदारतापूर्ण सहयोग जारी रखा।

1974–75 में सिक्किम के भारत में विलय पर भी नेपाल की ओर से प्रतिक्रिया आई किन्तु दोनों देशों की राजनीतिक समझ से इसका हल ढूंढ लिया गया। 1976 में नेपाल 'समदूरी सिद्धान्त' पर बल दिया जिससे भारत और चीन से समानदूरी की नीति अपनाई जा सके किन्तु भारत ने नेपाल सम्बन्धों एवं भोगोलिक सम्बन्धों पर

'समदूरी सिद्धान्त' को अनुचित बताया। 1978 में नेपाल के प्रधानमंत्री कीर्तिनिधि जी ने स्वीकार किया कि भारत–नेपाल सम्बन्ध मधुर नहीं थे जितने हो सकते थे।[6] जब नेपाल में लोकतान्त्रिक आन्दोलन ने जोर पकड़ा तो भारत ने कोई टीका–टिप्पणी नहीं की चीन हमेशा भारत–नेपाल द्विपक्षीय सम्बन्धों में तनाव को तूल देता रहा। फिर भी भारत–नेपाल के बीच व्यापार के आयात निर्यात का प्रतिशत 52 प्रतिशत बना रहा। 1985 में भारत–नापाल सार्क के संस्थापक का भी दोनों देशों ने स्वागत किया। 1990 तक आते–आते नेपाल प्रजातान्त्रिक मूल्यों को अपनाने में सक्षम हुआ और बहुदलीय प्रणाली को स्वीकार करके सर्वधानिक राजतन्त्र हो गया।

पिछले दशकों में भारत–नेपाल सम्बन्धों का राजनैतिक महत्व

1990 का दशक सम्पूर्ण विश्व में परिवर्तनकारी माना जाता है। इस समय उदारवादी बाजार व्यवस्था और भूमण्डलीकरण तथा निजीकरण के प्रभुत्व वाली मांग के रूप में स्वीकार किया जाता है। सत्ता केन्द्रीयकरण से विकेन्द्रीयकरण की ओर बढ़ रही थी। संचार क्रान्ति के कारण दुनिया सिमट रही थी और वैचारिक खुलापन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में तीव्रग्रामी था। जर्मनी का एकीकरण हुआ तो अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति कूटनीति और सम्बन्धों की नवीन स्थापना का युग आरम्भ हुआ। नेपाल पर यह प्रभाव शून्य कैसे हो सकता था। 1990 के दशक में नेपाल के जनमानस ने शताब्दियों से चले आ रहे असीमित राजतन्त्र को सर्वेधानिक राजतन्त्र में स्थापित कर लिया था। लोकतन्त्र की उत्तरदायी व्यवस्था को अपनाया गया।[7]

बदले परिवेश में 1990 के दशक में भारत–नेपाल सम्बन्धों में कुछ उत्साही परिणाम देखे गये। जैसे – 1992 में भारत–नेपाल के मध्य व्यापारिक गतिविधियों को व्यापक एवं विस्तारित किया गया। नेपाली उत्पादकों आयात शुल्क से मुक्त कर दिया गया। एक निश्चित समयविधि के भीतर करनाली, सप्तकोशी बूढ़ी गंडक, कोशी, बागमती नदियों पर परियोजनाऐं तैयार करने की सहमति प्रकट की। पंचेश्वी बिजली परियोजना पर भी सहमति बनी जिससे 2000 मेगावाट बिजली का उत्पादन एवं बाड़ की रोकथाम सिंचाई एवं पेयजल से जुडे मामले दोनों देश आपस में बाँटते रहे।[8]

किन्तु हाल के वर्षों में भारत–नेपाल सम्बन्धों में आई गिरावट के पीछे मौजूद कारणों एवं समस्याओं को पिछले कुछ दशको की विशेष परिणति कहा जा सकता है। जब तक दोनों देशों के पक्षों का विश्लेषण नहीं होगा तब तक भारत–नेपाल सम्बन्धों की वास्तविक पहचान नहीं हो सकती।

सम्बन्धों में विवाद के मुख्य कारण

भारत–नेपाल सम्बन्धों में अन्य पड़ोसी देशों की भाँति उतार चढ़ाव भरे है विशेष कर पिछले कुछ दशकों में दोनों के कोर मामलों का स्वरूप बदला है। जैसे नेपाल और चीन की बढ़ती निकटता और माओबादियों का भारत विरोधी रबैये ने सम्बन्धों के नवीन स्वरूप को जन्म दिया। इसमें कोई दोपराय नहीं कि भारत की कूटनीति नेपाल की राजनीतिक गतिविधियों को समझने में विफल रही है जिसके कारण अनेक नये पुराने विवद उठ खड़े हुए। जिन्हें निम्न प्रकार समझा जा सकता है।[9]

भारतीय मूल के वे लोग जो नेपाल में मघेशी कहलाते हैं उनके प्रति भारत की अति संवेदना नेपाली सत्ता और जन असन्तोष को जन्म दे रही है।

भारत–नेपाल के साथ प्रत्यार्पण सन्धि करना चहाता है ताकि भारत विरोधी वांछित अपराधियों का प्रत्यर्पण हो सके किन्तु नेपाल पाकिस्तान एवं चीन के दबाव में यह करना नहीं चहाता।

नेपाल का भारत पर आरोप है कि उसने नेपाल की 6000 हेक्टेयर भूमि 1962 (भारत–चीन) युद्ध के दौरान कालापानी क्षेत्र में कब्जा रखी है।

नेपाल में माओवादी नेतृत्व अथवा समर्थन से बनने वाली सरकारों के दोर से ही भारत विरोधी भावनाऐं जोर पकड़ रही है और 1950 की भारत नेपाल मैत्री सन्धि के पुनरीक्षण की मांग भी उठ खड़ी हुई है। नेपाल का दावा है इससे उसकी सम्प्रभुता प्रभावित होती है।[10]

नेपाल 1951 के द्विपक्षीय व्यापार सन्धि को, पारगमन सन्धि 1990 से अलग करके देखने को तैयार नहीं है चूँकि नेपाल को मिलने वाली व्यापारिक छूट, 1990 की पारगमन सन्धि से प्रतिबन्धित होती है। इसमें भारत का आरोप यह है कि नेपाल चीनी उत्पादों को नेपाली उत्पाद बताकर भारत के बाजारों में अवैध कारोबार कर रहा है।

नेपाल के माओवादियों द्वारा भारत पर आरोप है कि यह नेपाल के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप कर रहा है। 1950 के दशक में कोशी तटबनध सन्धि, गडक सन्धि 1996 महाकाली सन्धि पर नेपाली जनमानस में भ्रम फैलाया जा रहा है कि भारत इनसे सर्वाधिक लाभान्वित है और नेपाल के हिस्से केवल बाढ आती है। इसी परिप्रेक्ष में करनाली, सप्तकोशी एवं पंचेश्वर बांध परियोजनाओं पर भी रोक की मांग आज हो रही है।

भारत अपनी आन्तरिक सुरक्षा को लेकर चिन्ताग्रस्त है। चूँकि नेपाल के साथ खुली सीमा का इस्तेमाल आई0एस0आई0 द्वारा आतंकवादी गतिविधियों में किया जाता है। दूसरी और भारत के नक्सलवादियों की माओवादियों से वैचारिक निकटता एवं सम्पर्क है।

हिन्दी भाषा का विरोध भी नेपाल में आज एक राजनीतिक हथियार के तो पर प्रयोग हो रहा है।[11]

नेपाल की वर्तमान राजनीतिक रणनीति यह है कि येन केन प्रकारेण भारत और चीन से लाभ उठाया किसी स्पष्ट नीति का अनुसरण न किया जाए अर्थात नेपाल आज कूटनीतिक चारवाहक बन गया है।

उक्त पक्षों की समस्याओं, आरोपों प्रत्यारोपों के आलोक में देखा जाए तो नेपाली राजनीतिक व्यक्तियों एवं जनमानस में भारत की आलोचना करने वाले यह भूल जाते हैं कि 1950 भारत–नेपाल मैत्री सन्धि समानता के मौलिक सिद्धान्त पर आधारित है। भारत में बसने, शिक्षा, व्यवस्था, नौकरी, प्रशिक्षण, शादी विवाह के सन्दर्भों में नेपाली नागरिकों को भारतीय नागरिकों के समान ही अधिकार प्राप्त है। भारत सदैव एक अच्छे पड़ोसी के रूप में नेपाल की हर सम्भव मदद करता आया है।

निष्कर्ष :

भारत–नेपाल सम्बन्ध का सौहर्दपूर्ण होना न केवल दोनों देशों के भावी विकास के लिए महत्त्वपूर्ण, अपितु सम्पूर्ण दक्षिण एशिया की शान्ति एवं उन्नति के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। वर्तमान परिप्रेक्ष में दोनों राष्ट्रों को अपने राष्ट्रीय हित तो पूरे करने ही है साथ ही राजनीतिक इच्छा शक्ति के साथ अपने–अपने कोर विवादों को निपटाने पर बल देना चाहिए। सीमा सम्बन्धी विवाद हो, सन्धियों–सम्झोतो के पक्षीय दावे हो या फिर जनमानस में व्याप्त भ्रान्तिया दोनों देशों को तत्परता से समाधाम ढूंढना होगा। नेपाल अपने राष्ट्रीय हितों के चलते चीन की ओर बढ रहा है किन्तु उसे वह निश्चित करना होगा कि अपने हितों की पूर्ति की सम्भावनाओं में कहीं वह भारत जैसे अपने परम्परागत मित्र को खो तो नहीं रहा है। भारत को भी चाहिए, कि नेपाल की जायज मांगों पर विचार करे। एक पड़ोसी राष्ट्र के तौर पर भारत की सुरक्षा में नेपाल की भूमिका अहम थी और हमेशा रहेगी। ऐसा मेरा अपने देश की सरकार को इस शोध पत्र की सहायता से सुझाव है।

सन्दर्भ :

1. डॉ0 तोमर अलका, दक्षिण एशिया में महाशक्ति के रूप में उभरता भारत, पृ0–11
2. डॉ0 फहिया बी एल, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, पृ0–101
3. दृष्टि व विजन, भारत एवं विश्व तथा अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएं अध्ययन सामग्री, पृ0–7
4. जैन गिरिलाल, इंण्डियन मीट्स चायना इन नेपाल, पीपुतर प्रकाशन, बम्बई, पृ0–288
5. लोकसभा डिबेट पार्ट–1, वॉल्यूम 6 नं0 26, कालम 2108, 12 मार्च, पृ0–167
6. शर्मा बालचन्द्र, नेपाल की ऐतिहासिक रूप रेखा, पृ0–178
7. देवी कोट, जी.वी., नेपाल का राजनीतिक दर्पण, काटमाण्डू, पृ0–171
8. हरिवंश, नेपाल में गरीबी, विषभता और तस्करी का सिलसिला, लेख धर्मयुग दिल्ली, पृ0–115
9. यज्ञाचार्य, धन, नेपाल को लिच्छवि अभिलेख (नेपाली में,) पृ0–74–78
10. शास्त्री, के.ए., एज ऑफ नन्दज एण्ड मौर्यज, पृ0 221
11. फ्लोट, जे.एफ, कॉर्पस इंस्कृप्शन इण्डिकेरम, वाल्यूम 3, सुपरिटेन्डेण्ट ऑफ गवर्नमेन्ट, कलकत्ता, पृ0–82
12. स्मिथ, बी.ए., अशोक द बुद्धिस्ट एम्पर ऑफ इण्डिया, क्लरिन्दों प्रेस, ऑक्सफोर्ड, पृ0–118
13. गैरोला, वा., भारत के उत्तर–पूर्व, सीमान्त, देश, (भारत, नेपाल, सिक्किम, भूटान), पृ0–131